टी.वी. विज्ञापन कर्कश क्यों लगते हैं?

क्या आपको भी लगता है कि टी.वी. कार्यक्रमों के बीच में जो विज्ञापन आते हैं उनकी आवाज़ बहुत ऊंची होती है? आम तौर पर इच्छा होती है कि कमर्शियल ब्रेक में वॉल्यूम थोड़ा कम कर दें। कई लोग तो रिमोट की मदद से उस दौरान टी.वी. को 'म्यूट' (गूंगा) बना देते हैं। जब यह इतनी बड़ी समस्या है तो कोई इसका इलाज क्यों नहीं करता? दिक्कत यह है कि अब तक इसके इलाज में कुछ तकनीकी अड़चनें थीं जो शायद अब दूर हो जाएंगी।

आम तौर पर टी.वी. कार्यक्रम प्रसारण कम्पनियां अपने प्रसारण में अधिकतम ऊंची आवाज़ की एक सीमा तय करती हैं। इससे ऊंची आवाज़ हो तो प्रसारण केंद्र में लगा एक मीटर उसे नियंत्रित कर लेता है। अक्सर यह अधिकतम सीमा 8 डेसिबल होती है। मगर समस्या है कि हमें परेशानी उन आवाज़ों से नहीं होती जो कभी-कभी इस सीमा को छूती हैं। टी.वी. कार्यक्रमों के निर्माता अक्सर इस अधिकतम सीमा से काफी कम वॉल्यूम पर कार्यक्रम बनाते हैं और नाटकीय प्रभाव के लिए कभी-कभी इस अधिकतम डेसिबल की आवाज़ का उपयोग करते हैं। इससे ज़्यादा परेशानी नहीं होती।

दूसरी ओर विज्ञापन बनाने वाले लोगों के पास थोड़ा-सा समय होता है। इसलिए वे अपना पूरा विज्ञापन इस अधिकतम आवाज़ पर बना डालते हैं। यह परेशान करता है। मगर प्रसारणकर्ता कुछ नहीं कर सकते क्योंकि नियमानुसार ये विज्ञापन अधिकतम सीमा का उल्लंघन नहीं करते और प्रसारण केंद्र में लगा मीटर भी इनका कुछ नहीं कर पाता।

मगर अब अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ ने इस मामले में पहल की है। दुनिया भर के दर्शकों से मिली शिकायतों के आधार पर संघ ने कुछ प्रयास शुरू किए हैं और आशा है कि जल्दी ही इस समस्या से निजात मिलेगी। कनाडा में अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ के अनुसंधान केंद्र में इंजीनियर्स कई वॉलंटियर्स को विभिन्न कार्यक्रम व विज्ञापन दिखाकर उनकी प्रतिक्रियाएं रिकॉर्ड कर रहे हैं। ये कार्यक्रम व विज्ञापन संघ ने दुनिया भर से हासिल किए हैं। इसके आधार पर वे एक सॉफ्टवेयर तैयार करेंगे जो कार्यक्रमों की औसत आवाज़ पर ध्यान देगा। इस सॉफ्टवेयर की मदद से एक मीटर चलेगा जो आपको विज्ञापनों के आतंक से बचाएगा, ऐसी उम्मीद है। अगस्त माह में यह सॉफ्टवेयर कई प्रसारणकर्ताओं को परीक्षण हेतु उपलब्ध कराया जाएगा। *(स्रोत फीचर्स)*